अतिथि संगोष्ठी- "प्रबंधन में रहस्यों की खोज"

नवाचार व व्यावहारिक ज्ञान ही प्रबंधक की पूंजी : अजीत

आइआइएम अहमदाबाद के पूर्व प्राध्यापक प्रो. अजीत एन. माथुर ने अपने शैक्षणिक अनुभव के आधार पर रखीं अपनी बातें

जागरण संवाददाता, रांची : आइआइएम रांची में एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ। जिसका विषय एनक्वायरिंग इंटू मिस्टिरिज इन मैनेजमेंट था। इसमें बतौर वक्ता आइआइएम अहमदाबाद के पूर्व प्राध्यापक प्रो. अजीत एन. माथुर शामिल हुए। उन्होंने अपने शैक्षणिक अनुभव के आधार पर प्रबंधकीय कौशल और बतौर प्रबंधक व्यक्ति की सोच और इच्छाशक्ति पर अपनी बातें रखीं। उन्होंने कहा कि प्रबंधन शिक्षा और ज्ञान से प्रेरित करती है, पर कार्यक्षेत्र से जुड़ने के बाद ही व्यक्ति अपने प्रबंधकीय गुणों को विकसित करने में सफल हो सकता है। संस्थानों में काम व लक्ष्य तय करने के लिए कमेटी बनती है, पर काम को बांटने का कोई नियम नहीं होता। यह प्रबंधन कौशल और नेतृत्वकर्ता की जिम्मेदारी होती है कि वह व्यक्ति के व्यावहारिक ज्ञान और अनुभव के आधार पर काम तय करें।

आइआइएम अहमदाबाद के पूर्व प्राध्यापक को सम्मानित करते रांची के निदेशक।

तय लक्ष्य को पूरा किए बिना व्यक्ति भी अपनी क्षमता और कार्यनिष्ठा का प्रमाण नहीं दे सकते। प्रो. अजीत ने कहा प्रबंधक उत्पादन का लक्ष्य पूरा नहीं कर सकता। इसके लिए टीम की आवश्यकता होती है। सीमित संख्या में टीम हो तो काम में सफल होने का प्रतिशत बढ़ जाता है, इससे व्यापार व संस्थान को भी लाभ होगा। जबकि संख्या असामान्य या अधिक हो तो काम में बाधाएं आएंगी, सफल होने की संभावना भी कम रहती है। ऐसे में कार्यक्षेत्र में प्रबंधकीय सिद्धांतों का पालन करना आवश्यक है। प्रो. अजीत ने अंतरराष्ट्रीय प्रबंधन, अंतरराष्ट्रीय व्यापार और संस्थागत विकास के मानकों पर विस्तार से अपनी बातें रखीं। संगोष्ठी में शामिल प्राध्यापकों और शोधार्थियों को प्रबंधन कार्य के मूल इतिहास से रू-ब-रू कराया। बताया कि प्रबंधन कौशल का ज्ञान ब्रिटिश काल के बाद चर्चा में आया जबकि यूरोपीय देशों और अरब देशों में इसके जानकार पहले से कारगर थे। प्रबंधन कौशल के कारण ही यूरोपीय और अरब देशों ने विश्व भर में व्यापार को बढ़ावा दिया।

Dainik Jagran_30.04.2025_P. 17

नवाचार और व्यावहारिक ज्ञान ही प्रबंधक की पूंजी : प्रो माथुर

आइआइएम रांची में संगोष्ठी का आयोजन

लाइफ रिपोर्टर @ रांची

अतिथि का स्वागत करते पदाधिकारी.

प्रबंधन शिक्षा और ज्ञान से प्रेरित होता है. लेकिन कार्यक्षेत्र से जुड़ने के बाद ही व्यक्ति अपने प्रबंधकीय गुणों को विकसित करने में सफल हो सकता है. यह बात आइआइएम अहमदाबाद के पूर्व प्राध्यापक प्रो अजीत एन माथुर ने कही. उन्होंने आगे कहा कि संस्थानों में काम व लक्ष्य तय करने के लिए कमेटी बनायी जाती है, लेकिन काम को बांटने का कोई नियम नहीं होता है. यह प्रबंधन कौशल और नेतृत्वकर्ता की जिम्मेदारी होती है कि वह व्यक्ति के व्यावहारिक ज्ञान और अनुभव के आधार पर काम तय करें. तय लक्ष्य को पूरा किये बिना व्यक्ति अपनी क्षमता और कार्यनिष्ठा का प्रमाण नहीं दे सकते.

प्रो माथुर मंगलवार को आइआइएम रांची में आयोजित संगोष्ठी में बोल रहे थे. प्रो माथुर ने आगे कहा कि प्रबंधक उत्पादन का लक्ष्य पूरा नहीं कर सकता. इसके लिए टीम की जरूरत होती है. सीमित संख्या में टीम हो, तो काम में सफल होने का प्रतिशत बढ़ जाता है. इससे व्यापार और संस्थान को भी लाभ होगा. योजना को तय करना और तय लक्ष्य तक पहुंचना एक विस्तृत प्रक्रिया है.

उन्होंने प्रतिभागियों को दिखावे के ज्ञान से बचने की सलाह दी और आत्मविश्वास के आगे बढ़ने के लिए कहा. इस अवसर पर संस्थान के निदेशक प्रो दीपक कुमार श्रीवास्तव सहित कई शिक्षक और विद्यार्थी उपस्थित थे.

Dainik Jagran_30.04.2025_P. 17